UNIT- 4

* गाँधी जी का शिक्षा दर्शन :-

गाँधी जी का शिक्षा दर्शन उनके जीवन दर्शन पर आधारित है। उनकी सत्य, अहिंसा, त्याग निष्ठा एवं सहानुभूति आदि मानवीय गुणों में श्रद्धा थी और जीवन पर्यंत रही। इन मानवीय गुणों को शिक्षा द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। गाँधीजी के जीवन में सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक एवं आध्यात्मिक सभी पक्षों को स्थान मिला। गाँधी जी का शिक्षा के दर्शन को इनके जीवन दर्शन का गतिशील पक्ष है। गाँधीजी के शिक्षा दर्शन में प्रयोजनवाद का अद्भुत समन्वय पाया जाता है। इनके शिक्षा दर्शन में मौलिकवादी दृष्टि कोण भी दिखाई पड़ती है। गाँधीजी ने उत्पादक क्रिया को माध्यम बनाने की संस्तुति की है। इसके लिए आवश्यक है कि प्रत्येक बालक अपने बचपन से ही अपनी रोटी कमाने के लिए आदत बनाये तथा शिक्षा में श्रम तथा वैज्ञानिक ज्ञान को साथ जोड़ने की क्षमता होनी चाहिए।

* गाँधीजी ने शिक्षा के आधारभूत सिद्धांत दिये जो निम्नलिखित है :-

(1) शिक्षा द्वारा बालक में शारीरिक मानसिक तथा चारित्रिक क्षमताओं को विकसित किया जा सकता है।

(2) शिक्षा को बालक व बालिकाओं में निहित समस्त मानवीय गुणों को विकास करना चाहिए।

(3) सात से चौदह वर्ष के बालकों कि शिक्षा निशुल्क तथा अनिवार्य होनी चाहिए।

(4) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए ताकि छात्र में उसके प्रति व्यवहारिक दृष्टि कोण उत्पन्न हो सके।

(5) शिक्षा ऐसी हो जिसे प्राप्त करके बालक किसी न किसी व्यवसाय में लग जाए।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

(6.) किसी प्रयोग के द्वारा शिक्षा को स्वावलंबी बनाना चाहिए।

(7.) स्कूल ऐसा होना चाहिए, जहाँ बालक अपने प्रकार के प्रयोगों द्वारा नई-नई खोजें करता रहे।

* गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का अर्थ :-
गाँधीजी ने शिक्षा का अर्थ समझाते हुए कहा था कि शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के उत्कृष्ट एवं सर्वांगीण विकास से है। साक्षात्कार शिक्षा की न तो अंतिम सीढ़ी है न ही प्रथम सोपान यह तो पुरुष-स्त्री को साक्षर-शिक्षित करने का साधन है। साक्षरता स्वयं शिक्षा नहीं कहला सकती है। उनका विश्वास था कि शिक्षा को बालक की समस्त शक्तियों का ~~बालक~~ विकास करना चाहिए। जिससे वह पूर्ण मानव बन जाए। गाँधीजी ने लिखा है कि उस आदमी को सच्ची शिक्षा मिली है जिसका शरीर सधा हुआ है और कि उसके शरीर उसके काबु में रह सके और आराम एवं आसानी के साथ उसका बताया हुआ काम करे, उस आदमी को सच्ची शिक्षा मिली है कि उसका बुद्ध शुद्ध है। शांत और न्याय दर्शी है। शांत और न्याय उस आदमी को सच्ची शिक्षा मिली है।

* गाँधीजी के अनुसार शिक्षा के क्या उद्देश्य है
(1.) संतुलित व्यक्तित्व का उद्देश्य :-
(2.) जीविकोपार्जन का उद्देश्य :-
(3.) नैतिक या आध्यात्मिक विकास का उद्देश्य :-
(4.) सांस्कृतिक उद्देश्य :-
(5.) मुक्ति का उद्देश्य :-
(6.) सर्वोच्च उद्देश्य :-

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* रवीन्द्रनाथ टैगोर के दार्शनिक विचार :-

टैगोर उच्च कोटि के मानवतावादी थे। मानव व्यक्तित्व की गरिमा में उनका विश्वास था। वे मानव जाति का उद्धार करना चाहते थे और मनुष्य के मूल्य को गिराने का घोर विरोध करते थे। उन्हें विश्वास था कि यह दुनिया मूलरूप से मानवीय दुनिया है। वे मानते थे कि ईश्वर को भी वहीं पर खोजना चाहिए जहाँ पर किसान हल जोत रहा है।

टैगोर अंतर्राष्ट्रीय के अवरोध के बहुत बड़े समर्थक थे और वे बालकों में अंतर्राष्ट्रीय भावना को जागृत करना चाहते थे। वे अपने राष्ट्र से बहुत प्रेम करते थे और भारतीय राष्ट्र की परिस्थितियों को सुधारना चाहते थे। उनकी देश-भक्ति और उनका राष्ट्र-प्रेम अंतर्राष्ट्रीयता के मार्ग में बाधक नहीं थे। वे समस्त विश्व को एक समझते थे और हमें इस योग्य बनाना चाहते थे कि हम विश्व नागरिकता के प्रति सम्मान का भाव रख सकें।

* टैगोर के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य :-

टैगोर ने अपने लेखों में शिक्षा के उद्देश्यों की चर्चा की है। वे स्वस्थ्य शरीर को बहुत महत्व देते थे। उन्होंने शारीरिक विकास की शिक्षा को शिक्षा का प्रथम और मुख्य उद्देश्य बताया है। उनके अनुसार शिक्षा का दूसरा उद्देश्य बौद्धिक विकास होना चाहिए। वे पुस्तकीय शिक्षा के विरोधी थे। वे स्वतंत्र चिंतन के समर्थक थे। स्मृति पर अधिक भार न डालकर चिन्तन एवं कल्पना की शक्तियों का विकास आवश्यक है। शिक्षा समस्या में वे सच्चे अनुशासन का निरूपण करते हुए व्यक्ति के नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास पर बल देते हैं। वे युवकों को तपस्या ~~बल~~ एवं दृढ़ चरित्र की भावना का विकास करने का परामर्श देते हैं।

इस प्रकार की भावना तभी संभव है जब व्यक्ति आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास

Scanned by CamScanner

करें और अपनी आत्मा को सभी प्रकार की इच्छा से मुक्त करें। इस प्रकार टैगोर त्यागी को समाप्त करना आध्यात्मिक विकास के लिए बहुत आवश्यक समझते थे। टैगोर एक उच्च कोटि के अंतर्राष्ट्रीयता वादी थे। उन्होंने पूरब - पश्चिम का अभूतपूर्व सामन्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया। इस दृष्टि से वे शिक्षा द्वारा बालकों में अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास करने में रुचि लेते हुए दिखाई पड़ते हैं।

* टैगोर के द्वारा पाठ्यक्रम :→

टैगोर ने पाठ्यक्रम को विस्तृत बनाने का परामर्श दिया है। उनके अनुसार पाठ्यक्रम को उतना व्यापक होना चाहिए कि बालक के जीवन के सभी पक्षों का विकास हो सके। टैगोर ने किसी निश्चित पाठ्यक्रम की योजना नहीं बनायी। उन्होंने पाठ्यक्रम के संबंध में सामान्य विचार यत्र - तत्र प्रस्तुत किये हैं, और उन्हीं के आधार पर कहा जा सकता है कि वे सांस्कृतिक विषयों को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान देते थे। विश्व - भारती में इतिहास, भूगोल, विज्ञान, साहित्य प्रकृति अध्ययन आदि की शिक्षा दी ही जाती है। साथ में अभिनय, प्रयोग - अध्ययन, भ्रमण, चित्रकला, नृत्य, संगीत, मौलिक रचना आदि की शिक्षा की भी विशेष प्रबंध है।

* डॉ० जाकिर हुसैन का जीवन दर्शन एवं शिक्षा दर्शन :—

डॉ जाकिर हुसैन का जन्म 8 फरवरी 1897 ई० में हुआ था। अर्थशास्त्र में इन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। 1920 ई. में इन्होंने जामिया मिलिया की स्थापना की जो बाद में दिल्ली में स्थापित हो गया। 1936 ई. में बेसिक शिक्षा समिती के अध्यक्ष बने। 1948 से 1956 तक अलीगढ़ विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। 1957 ई. में बिहार के राज्यपाल बने। 1962 में भारत के उपराष्ट्रपति बने। 1954 में पद्मभूषण

एवं 1963 में भारतरत्न पुरस्कार मिला। 3 मई 1969 को इनकी मृत्यु हो गई।

वे एक पूर्ण रूप से एक शिक्षक थे। जैसे वे उच्च कक्षा को पढ़ाते थे वैसे वे प्राथमिक कक्षाओं को भी पढ़ाते थे। उनका कहना था कि विश्व के समस्त मानवों का जीवन एक जैसा ही है। वे धर्म निरपेक्षता के समर्थक थे। वे अध्यात्मिक व्यवहार को ही मुलतः मानवीय एवं श्रेष्ठ व्यवहार समझते थे। वे समाज से पृथक व्यक्ति को महत्वहीन मानते थे। बाह्य जगत के साक्षात्कार को ही वह ज्ञान मानते थे। उनके अनुसार ज्ञान दो प्रकार के होते हैं।

(1.) स्वअनुभव ज्ञान (2.) श्रुति ज्ञान (सुनकर)
(स्वयं करके)

इसमें स्वयं के अनुभव से प्राप्त ही वास्तविक एवं यथार्थ ज्ञान है। वे अहिंसा के पुजारी थे। मातृभाषा के स्थान पर यदि दुसरा भाषा थोपी जाए तो यह हिंसा है। वे मधन जनतंत्रवादी एवं सच्चे अर्थों में गाँधीवादी थे। इन्होंने ही गाँधीजी के बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत को मुर्त रूप प्रदान किया।

* शिक्षा दर्शन:-

(1.) वे स्त्री शिक्षा के समर्थक थे।

(2.) विद्यालय को सामुदायिक एवं सांस्कृतिक जीवन का केन्द्र बनाना चाहिए।

(3.) सामाज सेवा को विद्यार्थी के शिक्षा का अंग बनाना चाहिए।

(4.) विद्यालय को कार्यशाला के रूप में विकसित करने पर विचार किया।

(5.) श्रम के प्रति आस्था बढ़ाने पर बल दिया। उनका लक्ष्य था शिक्षा को कर्म से जोड़ना कम से कम द्वारा ही मस्तिष्क का स्वतंत्र रूप से विकास होगा।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

(6.) डॉ० जाकिर हुसैन जीवन की सरसता, व्यापकता, विविधता और यथार्थता को विद्यालयों के अंग बनाने के पक्षधर थे। उनका मत था कि वही बेहतर ~~शिक्षा~~ शिक्षा है जो उद्योग केन्द्रित समाज केन्द्रित तथा प्रकृति केन्द्रित है।

(7.) वे आत्मानुभूति को ही वास्तविक शिक्षा मानते थे। वे शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य जीविकोपार्जन नहीं मानते थे। उनका कहना था कि शिक्षा तो मानव मस्तिष्क के पूर्ण विकास का नाम है।

(8.) वे राष्ट्र में एकता एवं जागृति का एक मात्र साधन शिक्षा को ही मानते थे। राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा एक पुल है जो अतीत को वर्तमान से जोड़ता है।

* शिक्षा के उद्देश्य :-

(1.) व्यक्ति को पूर्णता प्रदान करना।

(2.) व्यक्ति को शाश्वत मूल्यों व आदर्श चरित्र की प्राप्ती और सांस्कृतिक उपलब्धियों से अवगत कराना।

(3.) व्यक्ति को बाह्य जगत से साक्षात्कार कराना।

(4.) परिवर्तनशील विश्व समाज के अनुरूप बालकों को ढालने का प्रयत्न करना।

(5.) बालकों को बाह्य जगत से सामंजस्य हेतु शारीरिक शक्तियों का विकास करना।

(6.) सांस्कृतिक जीवन में अपनी भागीदारी निभाना

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* डॉ० के अनुसार पाठ्यक्रम :—
डॉ० जाकिर हुसैन ने शिक्षा के हर स्तर पर कर्म की पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया। विशेष शिक्षा के तहत विज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल किया। शिक्षा के हर स्तर पर भाषा एवं इतिहास के पाठ्यक्रम को शामिल किया गया।

* शिक्षक के कार्य :—
(1.) शिक्षक का प्रथम दायित्व राष्ट्र के प्रति है।

(2.) शिक्षक का लक्ष्य विद्यार्थी में सत्य की पूर्णता की खोज के लिए उत्साह पैदा करना है।

(3.) शिक्षक का कर्तव्य बालक की मानसिक एवं शारीरिक शक्तियों का विकास करना है।

(4.) समाज में अज्ञानता, गरीबी एवं व्यवसन्ता, मिटाना शिक्षक के ही कार्य है।

* शिक्षण विधि :—
(1.) अन्य विधियों के अतिरिक्त डॉ० जाकिर हुसैन ने कार्य की शिक्षा के साथ जोड़ने की पद्धति पर जोड़ दिया।

(2.) स्वानुभव, किया-विधि, स्वाध्याय, प्रयोग-विधि प्रोजेक्ट एवं खेल विधि का प्रयोग किया।

* इन्होंने शिक्षा को पाँच स्तरों में विभाजित किया है।
(1.) प्राथमिक शिक्षा।
(2.) पूर्व माध्यमिक शिक्षा।
(3.) माध्यमिक शिक्षा।
(4.) उच्च शिक्षा।
(5.) विशेष शिक्षा।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* गिजुभाई के शिक्षा दर्शन एवं जीवन दर्शन :—

गिजुभाई का जन्म 15 November 1885 ई० को सौराष्ट्र के चित्तल गाँव में हुआ था। इनका पूरा नाम गिरधारीलाल भगवान जी बधेका था। लोग इन्हें गिजुभाई के नाम से ही पुकारते थे। वे पढ़ाई के बाद वकालत में अधिक दिन तक उनका मन नहीं लगा। उन्होंने वकालत छोड़ दी और शिक्षक बन गये। अब उनकी अदालत माता-पिता परिवार और विद्यालय बन गया। वे उन बातों के वकालत करने की सोची जिन्हें अपने परिवार में कुछ कहने की इच्छा जताने की स्वतंत्रता नहीं गिलती थी। उन्हें माता-पिता के अत्याचारों को सहन करना पड़ता था।

बच्चों के दुख का यहीं अंत नहीं था उन्हें विद्यालयों में भी पढ़ाई के नाम पर डाट-डपट और हिंसा का शिकार होना पड़ता था। इन सब के विरुद्ध माता-पिता व शिक्षकों की अदालत में उन्होंने बातों के पक्ष में वकालत की और बच्चों की शिक्षा पर गंभीर चिंतन किया। इसके लिए उन्होंने प्रचुर साहित्य का निर्माण किया। और बातों के जीवन को सुखमय बनाने का अथक प्रयास किया। गिजुभाई उस समय के गुजरात में स्थापित संस्था दक्षिणामूर्ती विद्यार्थी भवन के आजीवन सदस्य बन गये इस संस्था के द्वारा एक बालभवन चलाया जाता था। जिसमें गिजुभाई ने आचार्य के रूप में कार्य प्रारंभ किया।

1920 ई० में गिजुभाई ने दक्षिणामूर्ती विद्यार्थी भवन में एक बालमंदिर की स्थापना की। इस बालमंदिर में 2½ वर्ष की आयु से 6 वर्ष की आयु वाले बच्चों को रखा तथा उनके बीच उन्होंने शिक्षा प्रदान की। गांधीजी की तरह गिजुभाई भी शिक्षा के क्षेत्र में काफी चर्चित हो गये। वे शिक्षा के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग को लेकर कार्य करते थे। इसलिए इन्हें बच्चों के गांधी के नाम से जाना-जाने लगा।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* गिजुभाई के सिद्धांत :—

(1.) बाल देवो भव :

गिजुभाई अगस्त 1920 से जून 1936 तक छोटे - छोटे बच्चों के साथ रहकर तन्मयता से उनकी सेवा करते रहे। उन्होंने बाल मंदिर को एक मंदिर माना, और बालकों को उस मंदिर का देवता। स्वयं को उन बच्चों के मंदिर के देवता का पुजारी बनाया और एक सच्चे भक्त की तरह बालकों की उपासना करते रहे, उनकी सेवा करते रहे तथा उन्हें अच्छा जीवन बीताने की कला सीखाते रहे।

इन सब से बालक सेवा परोपकार त्याग सहयोग समाज सेवा आदि का पाठ पढ़ते थे। इन सब कार्यों में गिजुभाई साथ - साथ रहते, बताते, सीखाते और बच्चों को प्यार से कार्य में लगाते थे। उनके इस गुण के कारण बच्चे उन्हें मूछों वाली माँ के रूप में मानते थे प्यार करते थे और आदर करते थे।

(2.) बाल जगत एवं बाल अध्ययन :—

गिजुभाई को बाल - जगत का पारखी माना जाता है। वे बच्चों की दुनियाँ से पूर्ण परिचित थे। युग परिवर्तन के साथ - साथ न केवल जीवन जीने के कला में ही परिवर्तन आया बल्कि उसका प्रभाव बच्चों पर भी पड़ा।

(3.) बाल क्षमता :—

बालक के पास असीम शक्ति एवं क्षमताएं होती है। जरूरत है उसे उचित वातावरण मिलना चाहिए। सही वातावरण में उनका संपूर्ण विकास संभव है। वे हर कार्य स्वयं करके देखना चाहते थे।

(4.) बाल मंच :—

खलील जिब्रान ने कहा है कि " मार - पीटकर या दबाव में हम हाथ भर के

लिए अपनी बात बालकों से मनवा सकते हैं परंतु वह अंतरआत्मा से स्वीकारेंगे इसमें संदेह है।"

(5.) कल्पनाशीलता :-
बालक कल्पनाशीलता होता है, वह हर बातों को स्वयं करने की कल्पना करता है तथा उसे सूक्ष्म तरीकों से करता भी है। कहानी के द्वारा बच्चों के कल्पनाशक्ति में काफी विकास होते हैं। वह नायक की तरह अपने को ढालने या नकल करने की कोशिश भी करते हैं। वह जो कुछ भी सुनता है उसे मूर्त रूप से देने का प्रयास करता है।

* बाल साहित्य में गिजुभाई की देन :-
बाल साहित्य में गिजुभाई की देन महत्वपूर्ण है। इनके पूर्व गुजराती में भी श्रीदलपत राय ने गीत लिखे। उसके बाद 1915 में श्री हिम्मतलाल गणेश जी ने काव्य संग्रह प्रकाशित किया था। स्वतंत्रता आंदोलन प्रारंभ होने पर गुजराती में गाँधीवादी विचार धारा जोर पकड़ने लगी। इस काल में बाल-साहित्य में क्रांति के जनक थे। गिजु-भाई ने इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया। उन्होंने एक नए युग का सूत्रपात किया। गिजुभाई ने अपनी रचनाओं में बच्चों की रुचि व क्षमता का ध्यान रखा। उनकी आयु और विकास के अनुकूल साहित्य की रचना की। उनका मत था कि बालकों को इस योग्य होना चाहिए कि वे स्वयं कुछ निष्कर्ष लें।
कविता या कहानी में इतनी शक्ति होनी चाहिए कि वह बाल मन पर प्रभाव डाल दे। गिजुभाई के कई कहानियों का हिन्दी में भी अनुवाद हुआ है। मुख, ब्राह्मण, भूत का भाई आदि कहानियाँ हिन्दी में बड़े चाव से पढ़े जाते हैं। गिजुभाई को बाल साहित्य का सम्राट कहा जाता है। बाल जगत की जैसी जानकारी उन्हें थी वैसी कम लोगों को होती है। गिजुभाई बालक शिक्षक तथा बाल शिक्षा शास्त्री तो थे ही वे बाल विकास के प्रारंभिक चरण के श्रेष्ठ शिक्षक प्रशिक्षण भी सिद्ध होते हैं। बाल शिक्षा के जगत

में गिजुभाई की एक अनुपम कृति 'दिवास्वप्न' है। इसकी चर्चा करते हुए गिजुभाई ने लिखा है दिवास्वप्न स्वप्न प्राथमिक पाठशाला की एक स्वस्थ समालोचना है तथा भविष्य की नवीन प्राथमिक के मनोहर तथा स्पष्ट रूप की एक सुंदर झलक है। इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि यह संपूर्ण पुस्तक कहानी की शैली में लिखी ~~गयी~~ गयी है। प्राथमिक शाला में 'भाषा की शिक्षा' उनकी दूसरी उल्लेखनीय पुस्तक है जो शिक्षाशास्त्र से संबंधित है।

गिजुभाई के अनुसार सबसे पहले वाचन पर बल देना चाहिए। पहले पढ़ना और बाद में लिखना अर्थात 'सुबोधलो' का पालन करना चाहिए। प्राथमिक शाला में भाषा शिक्षण में वे लोकगीतों ग्रामगीतों के माध्यम से कविता शिक्षण का प्रारंभ करने को कहते हैं। कविता शिक्षण में अर्थ में अर्थ व व्याख्या पर बल न देकर रसात्मकता पर बल देने की बात करते हैं।

कविता शिक्षा द्वारा बालकों में गाने का शौक पैदा करना है। व्याकरण की शिक्षा व्यवहारिक रूप से पाठ के साथ ही दी जाए अलग से नहीं। खेल-खेल में वाक्य संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि की पहचान करना सीखें। इतिहास की कथनी के माध्यम से सिखाया जाए। ग्लोब और नक्शों की सहायता से भूगोल की शिक्षा दी जाए और उसे रोचक बनाया जाए। नाम व वस्तु देकर चित्र बनाने को कहें तथा उसमें रंग भरने को भी कहें इस तरह से चित्रकला की शिक्षा दी जाए। महापुरुषों की जीवनी को कहानी के माध्यम से बताया जाए तथा नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा दी जानी चाहिए ताकी उन्हें बोझ न लगे। इस तरह इन पुस्तकों के माध्यम से गिजुभाई ने शिक्षकों को यह समझाने का प्रयास किया है कि हमें बच्चों को कैसे पढ़ाना चाहिए।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* जॉन डीवी का शैक्षिक विकास :-

आधुनिक शिक्षा में समाजवाद तथा प्रयोजनवाद के सूत्रधार जॉन डीवी थे। उन्होंने कहा सामाजिक शिक्षा जीवन के सामाजिक पक्ष को प्रधानता देती है। शिक्षा का मुख्य कार्य व्यक्ति का सामाजीकरण करना है। अपने शैक्षिक विचारों को ठोस रूप देने के लिए सन् 1896 ई. में एक लेबोरेट्री स्कूल के नाम से विख्यात हुआ। इस स्कूल में 4 से 14 वर्ष के बालक दाखिल होते थे। स्कूल का सारा कार्यक्रम क्रियाशीलता पर आधारित था। डीवी की शिक्षा संबंधी कई रचनाएँ हैं जिनमें Democracy and Society तथा School and Society अधिक प्रसिद्ध है।

* जॉन डीवी का शिक्षा दर्शन :-

दर्शन के क्षेत्र में जॉन डीवी प्रयोजनवाद का समर्थक थे। अतः उसके अनुसार दर्शन का लक्ष्य किसी आध्यात्मिक सत्य की खोज नहीं शाश्वत मूल्य की पहचान है। वर्तमान युग के संघर्ष मुख्यतः तीन युग की सामाजिक स्थितियों से उत्पन्न होती है। प्रजातंत्र, उद्योग तथा विज्ञान दर्शन इसी सामाजिक संघर्षों का अध्ययन है। जॉन डीवी शैक्षिक विचारों पर उनकी दार्शनिक विचारों की गहरी छाप पड़ी है। उनके अनुसार दर्शन और शिक्षा में उच्च संबंध है। दर्शन का कार्य सामाजिक संघर्षों में प्रतिष्ठित मूल्यों का परीक्षण और नये मूल्यों का स्थापन है। यह कार्य शिक्षा के माध्यम से ही किया जा सकता है। शिक्षा के सहारे ही वह सड़े-गले पुराने मूल्यों का विस्फोट तथा नये मूल्यों की ~~[illegible]~~ उद्घोषणा कर सकता है। इस दृष्टि से दर्शन और शिक्षा एक हो जाती है। यदि शिक्षा वह प्रक्रिया है। जिसके सहारे मौलिक प्रवृत्तियाँ, बौद्धिक तथा सांवेगिक गतिशील होती है। तो शिक्षा का सिद्धांत ही दर्शन हो जाता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* डीवी के अनुसार शिक्षा का अर्थ :-

डीवी के दर्शन की स्पष्ट छाप उनके शिक्षा संबंधी विचारों पर है। उनके अनुसार शिक्षा जीवन की तैयारी की प्रक्रिया है। शिक्षा आत्मविश्वास की प्रक्रिया के अथवा अनुशासन है ऐसे विचारों को डीवी ने दोषपूर्ण बताया। डीवी ने शिक्षा की परिभाषा इन शब्दों में दी "शिक्षा अनुभव का वह पुनर्निर्माण का पुनर्गठन है जो अनुभव के दिशा - निर्देश की योग्यता बढ़ाता है।"

इस परिभाषा के विश्लेषण से निम्नलिखित तत्व प्रकट होते हैं।-

(1) शिक्षा अनुभवजन्य या अनुभव आश्रित है।
(2) अनुभव क्रियाशील से ही प्राप्त हो सकता है।
(3) वही अनुभव शैक्षिक या शिक्षा देने वाला है जो वस्तुओं के उन क्रियाकलापों या उन संबंधों की जानकारी कराये, जो पहले अज्ञात थे।

इस नई जानकारी के फलस्वरूप वस्तु संबंधी पुराना अनुभव स्वतः पुनर्गठित होगा।

पुनर्गठित अनुभव का परिणाम यह होना चाहिए कि व्यक्ति के आगे के अनुभवों की दिशा तथा उसकी आहुति को निर्धारित करने की योग्यता में वृद्धि हो। दूसरे शब्दों में शैक्षिक अनुभवों न केवल वर्तमान को अर्थपूर्ण बनाता है, बल्कि भविष्य का निर्देशन भी करता है।

* शिक्षा के उद्देश्य :-

डीवी के अनुसार अबतक शिक्षा के जो उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं वे भ्रमपूर्ण हैं। वस्तुतः शिक्षा का कोई उद्देश्य नहीं हो सकता है। शिक्षा तो एक विचार है। इसका कोई अपना लक्ष्य या उद्देश्य नहीं है। तथा कथित उद्देश्य नहीं है। तथा कथित उद्देश्य नहीं है। तथा कथित उद्देश्य माता-पिता, शिक्षक, शिक्षाशास्त्री, शासन आदि द्वारा निर्धारित

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

किये जाते है। इस तरह शिक्षा के जितने भी उद्देश्य है वाह्य रोपित है। शिक्षा से उनका कोई आंगिक लगाव नहीं है। अतः डीवी शिक्षा को विकास मानते है उनके अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया की कोई परिनीति नहीं है। शिक्षा और जीवन एक है। चूँकी विकास की कोई सीमा नहीं है। अतः शिक्षा की उद्देश्य के कोई सीमा नहीं है। अतः शिक्षा की उद्देश्य के कोई सीमा नहीं है। प्रयोजनवादी होने के नाते डिवी किसी पूर्व निश्चित उद्देश्य में विश्वास नहीं करता है। उसका कथन है "शिक्षा का सदैव ~~तत्का~~ तत्कालिक उद्देश्य होता है और जहाँ तक क्रिया शिक्षा-प्रद होती है वहाँ तक शिक्षा उस साध्य को प्राप्त करती है।"

डिवी ने सामाजिक दृष्टि से शिक्षा द्वारा सामाजिक कुशलता की प्राप्ति पर अधिक बल दिया है, उसके अनुसार सामाजिक दृष्टि से कुशल व्यक्ति है।

(1.) आर्थिक कुशलता।
(2.) निषेधात्मक नैतिकता।
(3.) स्वीकारात्मक नैतिकता।

* मारिया मोंटेसरी :-

डॉ. मोंनटेसरी एक यथोलिक धर्मावलंबी थी और आत्मा परमात्मा में विश्वास रखती थी। इन्होंने विज्ञान में शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने शिक्षा की कोई संपूर्ण योजना प्रस्तुत नहीं है वे केवल विकलांग एवं मंदबुद्धि बालकों और शिशुओं के शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किया था। इन्होंने शिशु मनोविज्ञान और शिशु शिक्षा के संदर्भ में बहुत कुछ लिखा है तथा मोंनटेसरी प्रणाली का विकास किया।

डॉ. मोंनटेसरी ने स्पष्ट किया है कि जन्म के समय मानव शिशु शारीरिक दृष्टि से तो पशु-शिशुओं से तो कम विकसित होता है परन्तु उसमें विकास की क्षमताएँ पशु शिशुओं से अधिक होती है।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

इनके अनुसार शिक्षा मनुष्य की इन जन्मजात क्षमताओं के विकास में सहायता करती है। इन्होंने एक स्थान पर यह भी स्पष्ट किया है कि मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें नई-नई परिस्थितियों में समायोजन करने की क्षमता विकसित की जा सकती है। इनकी दृष्टि की वास्तविक ज्ञान शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य की इन जन्मजात क्षमताओं के विकास में सहायक करती है। इन्होंने एक स्थान पर यह भी स्पष्ट किया है कि मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें नई-नई परिस्थितियों में समायोजन करने की क्षमता विकसित की जा सकती है। इनकी दृष्टि से वास्तविक शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात क्षमताओं का विकास करती है और उसे नई-नई परिस्थितियों में समायोजन करने योग्य बनाती है। ये शिक्षा को जीवन की तैयारी का साधन मानती थी।

* मॉन्टेसरी प्रणाली में उपयोग होने वाली उपकरण:

(1) घरेलू उपकरण → घरेलू वातावरण में झारण, मक्खन, तेल, साबुन, तौलियाँ, कंघा, शीशा, जूते की पॉलिस, सुई-धागा, कैंची, खाना बनाने की सामग्री, खाना खाने के लिए बर्तन और बर्तन साफ करने का पाउडर आते हैं।

(2) शैक्षिक उपकरण → शैक्षिक उपकरणों में श्यामपट्ट, चॉक-डस्टर एवं अन्य उपकरण आते हैं।

(3) शैक्षिक यंत्र →
शैक्षिक यंत्रों में मॉन्टेसरी द्वारा तैयार किए गए उपदेशात्मक उपकरण आते हैं। जैसे:- बेलन, घन, गोला, क्रॉस, लकड़ी का गुटका, रंग-बिरंगी लकड़ी की टीकियाँ, विभिन्न ध्वनी उत्पन्न करने वाली घंटियाँ, भिन्न-भिन्न स्वाद वाले भोज्य पदार्थ, भिन्न-भिन्न सुगंधों के पदार्थों से भरी बोतलें, फ्लैश कार्ड, अंकों के कार्ड, रंगीन पेन्सिलें आदि।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* मॉन्टेसरी प्रणाली के अनुशासन :-

मॉन्टेसरी के अनुसार वास्तविक अनुशासन आंतरिक होता है और वे इसकी नींव शिशु शिक्षा में रख देना चाहती थी। वे चाहती थी कि मॉन्टेसरी स्कूलों में शिशुओं को ऐसा पर्यावरण दिया जाए कि वे कुछ भी करने के लिए पूर्ण स्वतंत्र होते हुए वही करें जो अनुशासन की माँग है। मॉन्टेसरी का तर्क है कि जब शिशु अपनी परिस्थितियों का स्वयं अवलोकन कर उसमें समायोजन के लिए जैसा करना उचित होगा वैसा ही करेंगे तो वे वास्तविक अनुशासन की ओर बढ़ेंगे। इस प्रकार से प्राप्त अनुशासन को मॉन्टेसरी ने तार्किक अनुशासन कहा है।

* मॉन्टेसरी प्रणाली के शिक्षक :-

शिक्षक के संबंध में भी मॉन्टेसरी ने केवल मॉन्टेसरी स्कूलों के शिक्षकों के विषय में सोचा समझा और कहा है। इनकी दृष्टि से शिशु शिक्षा के शिक्षकों को बहुत संवेदनशील और मातृ-तुल्य व्यवहार करनेवाला होना चाहिए। इसलिए वे इस स्तर पर केवल महिलायें की नियुक्ति करने के पक्ष में थी। उनका तर्क था कि महिला शिक्षिका ही शिशुओं के प्रति संवेदनशीलता एवं महत्व का प्रेम दे सकती है।